॥ श्रीहरिः ॥
702
यह विकास है या विनाश? जरा सोचिये
गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR
स्वामी रामसुखदास
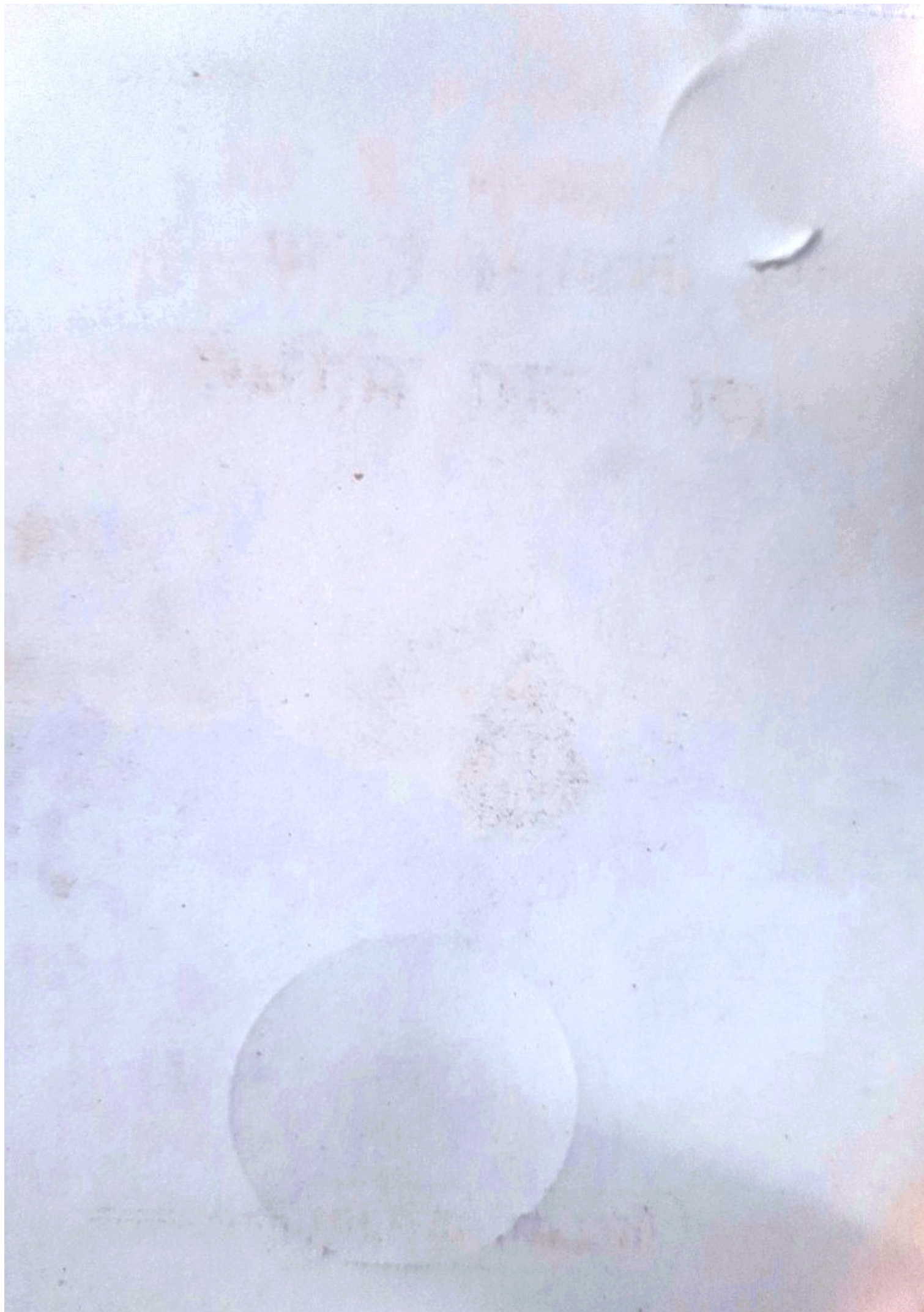
702

॥ श्रीहरिः ॥

यह विकास है या विनाश? जरा सोचिये

गीताप्रेस, गोरखपुर

702 Yah vikas ya vinas_Section_1_Front

सं० २०७५ सोलहवाँ पुनर्मुद्रण ८,०००

कुल मुद्रण १,७४,०००

❖ मूल्य—₹ ५
(पाँच रुपये)
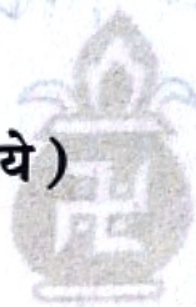
प्रकाशक एवं मुद्रक—

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३१२५१

web : gitapress.org e-mail : booksales@gitapress.org

गीताप्रेस प्रकाशन gitapressbookshop. in से online खरीदें।

702 Yah vikas ya vinas_Section_1_Back

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

~~○~~

॥ श्रीहरिः ॥

आवश्यक चेतावनी

—ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा विचार करें

१. परिवार-नियोजन कार्यक्रमसे जीवन-निर्वाहके साधनोंमें तो वृद्धि नहीं हुई है, पर ऐसी अनेक बुराइयोंकी वृद्धि अवश्य हुई है, जिनसे समाजका घोर पतन हुआ है।

२. जीवन-निर्वाहके साधनोंमें कमी (बेरोजगारी, निर्धनता आदि) होनेका कारण जनसंख्याकी वृद्धि नहीं है, प्रत्युत अपने सुखभोगकी इच्छाओंकी वृद्धि है। भोगेच्छाकी वृद्धि होनेसे मनुष्य आरामतलब, आलसी और अकर्मण्य हो जाता है, जिससे वह जीवन-निर्वाहके साधनोंका उपभोग (खर्चा) तो अधिक करता है, पर उत्पादन कम करता है।

३. परिवार-नियोजनका कारण है कि मनुष्यका न तो 'ईश्वर' पर विश्वास है कि ईश्वर सबका पालन करनेवाला है, न अपने 'भाग्य' पर विश्वास है कि हरेक व्यक्ति अपने भाग्यके अनुसार पाता है और न अपने 'पुरुषार्थ' पर विश्वास है कि मैं अपने पुरुषार्थसे कमाकर परिवारका पालन-पोषण कर सकता हूँ।

४. सरकारका कर्तव्य अपने देशमें जन्म लेनेवाले प्रत्येक नागरिकके जीवन-निर्वाहका प्रबन्ध करना है, न कि उसके जन्मपर ही रोक लगा देना। जन्मपर रोक लगाना वास्तवमें अपनी पराजय (प्रबन्ध करनेमें असमर्थता) स्वीकार करना है।

५. जनताकी आवश्यकताओंके अनुसार जीवन-निर्वाहके साधनोंमें वृद्धि न करके जनसंख्याको ही कम करना वैसे ही है, जैसे शरीरपर कोई कपड़ा ठीक न आये तो कपड़ेका आकार ठीक

करनेकी अपेक्षा शरीरको ही काटकर छोटा करना! अथवा भोजनालयमें ज्यादा आदमी आने लगें तो ज्यादा भोजन न बनाकर आदमियोंको ही मारना शुरू कर देना!

६. मनुष्योंको पैदा होनेसे रोककर अधिक अन्न पैदा करनेकी चेष्टा वैसे ही है, जैसे बच्चेको गर्भमें न आने देकर माँका दूध अधिक पैदा करनेकी चेष्टा करना!

७. जहाँ वृक्ष अधिक होते हैं, वहाँ वर्षा अधिक होती है, फिर मनुष्य अधिक होंगे तो क्या अन्न अधिक नहीं होगा? प्रत्यक्ष बात है कि पहले जनसंख्या कम थी तो अनाज विदेशोंसे मँगाना पड़ता था; परन्तु अब जनसंख्या बढ़ गयी तो अनाज, फल आदि वस्तुएँ विदेशोंमें भेजी जाती हैं।

८. आवश्यकता ही आविष्कारकी जननी है।

यदि जनसंख्या बढ़ेगी तो उसके पालन-पोषणके साधन भी बढ़ेंगे, अन्नकी पैदावार भी बढ़ेगी, वस्तुओंका उत्पादन भी बढ़ेगा, उद्योग भी बढ़ेगा। फिर जनसंख्या-वृद्धिकी चिन्ता क्यों ?

९. मनुष्यके पास केवल पेट ही नहीं होता, प्रत्युत दो हाथ, दो पैर और एक मस्तिष्क भी होता है, जिनसे वह केवल अपना ही नहीं, प्रत्युत कई प्राणियोंका भरण-पोषण कर सकता है। फिर जनसंख्या-वृद्धिकी चिन्ता क्यों ?

१०. उत्पादनको तो बढ़ाना चाहते हैं, पर उत्पादक-शक्ति (जनसंख्या) का ह्रास कर रहे हैं—यह कैसी बुद्धिमानी है ?

११. एक-दो सन्तान होगी तो घरका काम ही पूरा नहीं होगा, फिर समाजका काम कौन करेगा ? खेती कौन करेगा ? सेनामें कौन भरती होगा ? सच्चा मार्ग बतानेवाला साधु कौन बनेगा ?

बूढ़े माँ-बापकी सेवा कौन करेगा?

१२. जन्मपर तो नियन्त्रण, पर मौतपर कोई नियन्त्रण नहीं—यह कैसी बुद्धिमानी? जो मृत्युपर नियन्त्रण नहीं रख सकता, उसको जन्मपर भी नियन्त्रण रखनेका अधिकार नहीं है। अगर वह ऐसा करेगा तो इसका परिणाम नाश-ही-नाश होगा!

१३. जन्म-मरणका कार्य (जनसंख्याका नियन्त्रण) मनुष्यके हाथमें नहीं है, प्रत्युत सृष्टिकी रचना करनेवाले ईश्वर और प्रकृतिके हाथमें है। ईश्वर और प्रकृतिके विधानसे जनसंख्याका नियन्त्रण अनादिकालसे स्वतः-स्वाभाविक होता आया है। अगर मनुष्य उनके विधानमें हस्तक्षेप करेगा तो इसका परिणाम बड़ा भयंकर होगा।

१४. कुत्ते, बिल्ली, सूअर आदिके एक-एक

बारमें कई बच्चे होते हैं और वे सन्तति-निरोध भी नहीं करते, फिर भी उनसे सब सड़कें, गलियाँ भरी हुई नहीं दीखतीं। उनकी संख्याका नियन्त्रण जिस शक्तिके द्वारा होता है, उसीके द्वारा मनुष्योंकी संख्याका भी नियन्त्रण होता है। इसकी जिम्मेवारी मनुष्योंपर है ही नहीं।

१५. गर्भ-स्थापन कर सकनेके सिवाय कोई पुरुषत्व नहीं है और गर्भधारण कर सकनेके सिवाय कोई स्त्रीत्व नहीं है। अगर पुरुषमें पुरुषत्व न रहे और स्त्रीमें स्त्रीत्व न रहे तो वे मात्र भोगी जीव ही रहे; न मनुष्य रहे, न मनुष्यता रही!

१६. जिसका मरना निश्चित है, उसके भरोसे सन्तति-निरोध करा लेना कितनी बेसमझीकी बात है! अभी एक-दो सन्तान है, वह अगर मर जाय तो क्या दशा होगी?

१७. मनुष्योंमें हिन्दू जाति सर्वश्रेष्ठ है। इसमें बड़े विलक्षण-विलक्षण ऋषि-मुनि, सन्त-महात्मा, दार्शनिक, वैज्ञानिक, विचारक पैदा होते आये हैं। जब इस जातिके मनुष्योंको जन्म ही नहीं लेने देंगे तो फिर ऐसे श्रेष्ठ, विलक्षण पुरुष कैसे और कहाँ पैदा होंगे?

१८. वर्तमान वोट-प्रणालीका जनसंख्याके साथ सीधा सम्बन्ध है। अतः जिस जातिकी जनसंख्या अधिक होती है, वही जाति बलवान् होकर (वोटके बलपर) देशपर राज्य करती है। जो जाति परिवार-नियोजनको अपनाती है, वह परिणाममें अपने अस्तित्वको ही नष्ट कर देती है। वर्तमानमें परिवार-नियोजन और धर्मान्तरणके द्वारा हिन्दुओंकी संख्या तेजीसे कम हो रही है। फिर किसका राज्य होगा और क्या दशा होगी? जरा सोचो!

१९. संतति-निरोधके कृत्रिम उपायोंके प्रचार-प्रसारसे समाजमें प्रत्यक्षरूपसे व्यभिचार, भोगपरायणता आदि दोषोंकी वृद्धि हो रही है, कन्याएँ और विधवाएँ भी गर्भवती हो रही हैं, लोगोंमें चरित्र, शील, संयम, लज्जा, ब्रह्मचर्य आदि गुणोंका ह्रास हो रहा है, जिससे देशका सब दृष्टियोंसे घोर पतन हो रहा है।

२०. संतति-निरोधके द्वारा नारीके मातृरूपको नष्ट करके उसको केवल भोग्या बनाया जा रहा है। भोग्या स्त्री तो वेश्या होती है। यह नारी-जातिका कितना महान् अपमान है!

२१. संतति-निरोधके मूलमें केवल सुखभोगकी इच्छा विद्यमान है। अपनी सन्तान इसलिये नहीं सुहाती कि वह हमारे सुखभोगमें बाधक है, फिर अपने माँ-बाप, भाई-बहन कैसे सुहायेंगे?

२२. अगर सन्तानकी इच्छा न हो तो संयम

रखना चाहिये। संयम रखनेसे स्वास्थ्य ठीक रहता है, उम्र बढ़ती है, शारीरिक-पारमार्थिक सब तरहकी उन्नति होती है। हल तो चलाये, पर बीज डाले ही नहीं—यह कैसी बुद्धिमानी है?

२३. संतति-निरोधकी भावनासे मनुष्य इतना क्रूर, निर्दय, हिंसक हो जाता है कि गर्भमें स्थित अपनी सन्तानकी भी हत्या (भ्रूणहत्या या गर्भपात) करनेमें हिचकता नहीं, जो कि ब्रह्महत्यासे भी दुगुना पाप है!

२४. गर्भपातके समान दूसरा कोई भयंकर पाप है ही नहीं। संसारका कोई भी श्रेष्ठ धर्म इस महान् पापको समर्थन नहीं देता और न दे ही सकता है। कारण कि यह काम मनुष्यताके विरुद्ध है। क्रूर और हिंसक पशु भी ऐसा काम नहीं करते।

२५. गर्भमें स्थित शिशु अपने बचावके लिये

कोई उपाय नहीं कर सकता, प्रतीकार भी नहीं कर सकता, अपनी रक्षाके लिये पुकार भी नहीं सकता, चिल्ला भी नहीं सकता, उसका कोई अपराध, कसूर भी नहीं है। ऐसी अवस्थामें उस निर्बल, असहाय, निरपराध, निर्दोष, मूक शिशुकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है!

२६. एक कहावत है कि अपने द्वारा लगाया हुआ विषवृक्ष भी काटा नहीं जाता। जिस गर्भको स्त्री-पुरुष मिलकर पैदा करते हैं, उसकी अपने ही द्वारा हत्या कर देना कितनी कृतघ्नता है! कसूर (असंयम) तो खुद करते हैं, पर हत्या बेकसूर गर्भकी करते हैं, यह कितना बड़ा अन्याय है!

२७. गर्भमें आया जीव जन्म लेकर न जाने कितने अच्छे लौकिक तथा पारमार्थिक कार्य करता, समाज तथा देशकी सेवा करता, अनेक

कोई उपाय नहीं कर सकता, प्रतीकार भी नहीं कर सकता, अपनी रक्षाके लिये पुकार भी नहीं सकता, चिल्ला भी नहीं सकता, उसका कोई अपराध, कसूर भी नहीं है। ऐसी अवस्थामें उस निर्बल, असहाय, निरपराध, निर्दोष, मूक शिशुकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है!

२६. एक कहावत है कि अपने द्वारा लगाया हुआ विषवृक्ष भी काटा नहीं जाता। जिस गर्भको स्त्री-पुरुष मिलकर पैदा करते हैं, उसकी अपने ही द्वारा हत्या कर देना कितनी कृतघ्नता है! कसूर (असंयम) तो खुद करते हैं, पर हत्या बेकसूर गर्भकी करते हैं, यह कितना बड़ा अन्याय है!

२७. गर्भमें आया जीव जन्म लेकर न जाने कितने अच्छे लौकिक तथा पारमार्थिक कार्य करता, समाज तथा देशकी सेवा करता, अनेक

लोगोंकी सहायता करता, सन्त-महात्मा बनकर अनेक लोगोंको सन्मार्गमें लगाता, अनेक तरहके आविष्कार करता आदि-आदि। परन्तु जन्म लेनेसे पहले ही उसकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है, अपराध है!

२८. जीवमात्रको जीनेका अधिकार है। उसको गर्भमें ही नष्ट करके उसके अधिकारको छीनना महान् पाप है।

२९. जब मनुष्यकी हत्याको बहुत बड़ा पाप मानते हैं और अपराधी मनुष्यको भी फाँसीकी सजा न देकर आजीवन कारावासकी सजा देते हैं, तो फिर यह गर्भपात क्या है? क्या यह निरपराध मनुष्यकी हत्या नहीं है?

३०. गर्भमें आये जीवको अनेक जन्मोंका ज्ञान होता है, इसलिये भागवतमें उसको 'ऋषि' (ज्ञानी) नामसे कहा गया है। अतः

गर्भपात करनेसे एक ऋषिकी हत्या होती है। इससे बढ़कर और पाप क्या होगा?

३१. लोग गर्भ-परीक्षण करवाते हैं और गर्भमें कन्या हो तो गर्भपात करा देते हैं, क्या यह नारी-जातिको समान अधिकार देना है? क्या यह नारी-जातिका सम्मान करना है?

३२. संसारी लोगोंकी दृष्टिमें जो सबसे बड़ा सुख है, जिस सुखके बिना भोगी मनुष्य रह नहीं सकता, जिस सुखका वह त्याग नहीं कर सकता, उस सुखको देनेवाले गर्भकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है! यह पापकी, कृतघ्नताकी, दुष्टताकी, नृशंसताकी, क्रूरताकी, अमानुषताकी, अन्यायकी आखिरी हद है! अर्थात् इससे बढ़कर अपराध कोई हो नहीं सकता।

३३. मनुष्यशरीरको बड़ा दुर्लभ बताया

गया है। मनुष्यशरीरमें आकर जीव अपना और दूसरोंका भी कल्याण कर सकता है। परन्तु उस जीवको ऐसा दुर्लभ मौका न मिलने देना, संतति-निरोध करके उसको जन्म ही न लेने देना अथवा जन्म लेनेसे पहले ही गर्भपात करके उसकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है!

३४. जो माता-पिता अपने बच्चेका स्नेहपूर्वक पालन और रक्षा करनेवाले होते हैं, वे ही अपने गर्भस्थ बच्चेकी हत्या कर देंगे तो किससे रक्षाकी आशा की जायगी?

~~o~~

उपर्युक्त बातोंको विस्तारसे समझनेके लिये गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित ये दो पुस्तकें अवश्य पढ़ें—(१) महापापसे बचो (२) देशकी वर्तमान दशा तथा उसका परिणाम।

॥ श्रीहरिः ॥

सबसे बड़ा पाप—गर्भपात

संसारी लोगोंकी दृष्टिमें जो सबसे बड़ा सुख है, जिस सुखके बिना भोगी मनुष्य रह नहीं सकता, जिस सुखका वह त्याग नहीं कर सकता, उस सुखको देनेवाले गर्भकी वह (कृत्रिम गर्भपातद्वारा) हत्या कर देता है—इससे बढ़कर पाप और क्या होगा? यह पापकी, कृतघ्नताकी, दुष्टताकी, अन्यायकी आखिरी हद है।

मनुष्यशरीर सबसे दुर्लभ है, जिसको पानेकी इच्छा चर-अचर सभी प्राणी करते हैं—'***नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही॥***' (मानस, उत्तर० १२१।५) जब मनुष्यकी हत्याको बहुत बड़ा पाप मानते हैं और अपराधी मनुष्यको भी फाँसीकी सजा न

देकर आजीवन कारावासकी सजा देते हैं, तो फिर यह गर्भपात क्या है? क्या यह निरपराध मनुष्यकी हत्या नहीं है? बुद्धि कितनी मारी गयी है! एक मारवाड़ी कहावत है—बुद्धिमें कुत्ता मूत गया! अपना भला चाहनेवाला कोई भी मनुष्य ऐसा घृणित पाप नहीं कर सकता। कोई भी धर्माचार्य इस पापका अनुमोदन नहीं करता।

गर्भपातसे बढ़कर कोई पाप नहीं, कोई हिंसा नहीं, कोई दुष्टता नहीं, कोई कृतघ्नता नहीं, कोई अन्याय नहीं, कोई अत्याचार नहीं, कोई राक्षसपना नहीं! इसके समान भी कोई घृणित पाप नहीं है, फिर बढ़कर तो हो ही कैसे? इससे बढ़कर कोई पाप सम्भव ही नहीं है। जिसको हम पैदा नहीं कर सकते, उसको नष्ट कर देनेका हमें कोई अधिकार नहीं है।

सुखकी इच्छा सम्पूर्ण पापोंका मूल है। जैसे

वृक्षके एक बीजमें मीलोंतकका जंगल भरा हुआ है, ऐसे ही सुखभोगकी इच्छामें सम्पूर्ण पाप, दुःख भरे हुए हैं। अतः जब मनुष्य केवल अपने सुखकी इच्छासे ही स्त्रीका संग करता है, सन्तानकी इच्छासे नहीं, तो यह पहला महान् पाप हुआ। फिर जब स्त्रीमें गर्भ पैदा होता है, तब उस गर्भको नष्ट कर देते हैं—यह गर्भहत्यारूप दूसरा महान् पाप हुआ। एक कहावत है कि अपने द्वारा लगाया गया विषका वृक्ष भी काटा नहीं जाता, फिर अपने ही द्वारा पैदा किये गये बेकसूर गर्भकी आप ही हत्या कर देना कितना भयंकर पाप है! ऐसे पापका बड़ा भयंकर फल भोगना ही पड़ेगा, इससे कोई बच नहीं सकता—'**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**'।

याद रखें, दूसरेके सुखके लिये भोगा गया दुःख परिणाममें महान् आनन्द देनेवाला होता

है; परन्तु अपने सुखके लिये दूसरेको दिया गया दुःख परिणाममें भयंकर दुःख देनेवाला होता है। अब आप ही फैसला करें कि आपको क्या चाहिये—महान् आनन्द या महान् दुःख?

गर्भमें आये जीवको अनेक जन्मोंका ज्ञान होता है*। इसलिये श्रीमद्भागवतमें गर्भस्थ जीवको 'ऋषि' (ज्ञानी) कहा गया है—

'**नाथमान ऋषिर्भीतः**' (३। ३१। ११)

'**एवं कृतमतिर्गर्भे दशमास्यः स्तुवन्नृषिः**'

(३। ३१। २२)

गर्भहत्या करनेसे एक ऋषिकी हत्या होती है।

---

* अथ नवमे मासि सर्वलक्षणसम्पूर्णो भवति पूर्वजातीः स्मरति कृताकृतं च कर्म भवति शुभाशुभं च कर्म विन्दति। (गर्भोपनिषद् ३)

अकल्पः स्वाङ्गचेष्टायां शकुन्त इव पञ्जरे।
तत्र लब्धस्मृतिर्दैवात्कर्म जन्मशतोद्भवम्॥

(श्रीमद्भा० ३। ३१। ९)

इससे बढ़कर और क्या पाप होगा ? शास्त्रमें इसके समान भयंकर पाप हमें कोई मिला नहीं। ऐसा भयंकर महापाप करनेवालोंकी क्या दशा होगी, भगवान् जानें !

गर्भस्थ बच्चेकी हत्याका आँखोंदेखा विवरण

अमेरिकामें सन् १९८४ में एक सम्मेलन हुआ था—'**नेशनल राइट्स टू लाईफ कन्वैन्शन**'। इस सम्मेलनके एक प्रतिनिधिने डॉ० बर्नार्ड नेथेनसनके द्वारा गर्भपातकी बनायी गयी एक अल्ट्रासाउण्ड फिल्म '**साइलेण्ट स्क्रीम**' (गूँगी चीख) का जो विवरण दिया था, वह इस प्रकार है—

'गर्भकी वह मासूम बच्ची अभी दस सप्ताहकी थी व काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँकी कोखमें खेलते, करवट बदलते व अँगूठा चूसते

हुए देख रहे थे। उसके दिलकी धड़कनोंको भी हम देख पा रहे थे और वह उस समय १२० की साधारण गतिसे धड़क रहा था। सब कुछ बिलकुल सामान्य था; किन्तु जैसे ही पहले औजार (सक्सन पम्प) ने गर्भाशयकी दीवारको छुआ, वह मासूम बच्ची डरसे एकदम घूमकर सिकुड़ गयी और उसके दिलकी धड़कन काफी बढ़ गयी। हलाँकि अभीतक किसी औजारने बच्चीको छुआतक भी नहीं था, लेकिन उसे अनुभव हो गया था कि कोई चीज उसके आरामगाह, उसके सुरक्षित क्षेत्रपर हमला करनेका प्रयत्न कर रही है।

हम दहशतसे भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्हीं-मुन्नी मासूम गुड़िया-सी बच्चीके टुकड़े-टुकड़े कर रहा था। पहले कमर, फिर पैर आदिके टुकड़े ऐसे काटे जा रहे थे जैसे वह जीवित प्राणी न होकर कोई गाजर-

मूली हो और वह बच्ची दर्दसे छटपटाती हुई, सिकुड़कर घूम-घूमकर तड़पती हुई इस हत्यारे औजारसे बचनेका प्रयत्न कर रही थी। वह इस बुरी तरह डर गयी थी कि एक समय उसके दिलकी धड़कन २०० तक पहुँच गयी! मैंने स्वयं अपनी आँखोंसे उसको अपना सिर पीछे झटकते व मुँह खोलकर चीखनेका प्रयत्न करते हुए देखा, जिसे डॉ० नेथेनसनने उचित ही 'गूँगी चीख' या 'मूक पुकार' कहा है। अन्तमें हमने वह नृशंस व वीभत्स दृश्य भी देखा, जब सँडसी उसकी खोपड़ीको तोड़नेके लिये तलाश रही थी और फिर दबाकर उस कठोर खोपड़ीको तोड़ रही थी; क्योंकि सिरका वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूबके माध्यमसे बाहर नहीं निकाला जा सकता था।'

हत्याके इस वीभत्स खेलको सम्पन्न करनेमें करीब पन्द्रह मिनटका समय लगा और इसके

दर्दनाक दृश्यका अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता है कि जिस डॉक्टरने यह गर्भपात किया था और जिसने मात्र कौतूहलवश इसकी फिल्म बनवा ली थी, उसने जब स्वयं इस फिल्मको देखा तो वह अपना क्लीनिक छोड़कर चला गया और फिर वापस नहीं आया!

(—श्रीगोपीनाथ अग्रवालद्वारा लिखित एवं जैन बुक एजेन्सी, नई दिल्लीसे प्रकाशित 'गर्भपात' नामक पुस्तकसे साभार)

गर्भपातके विषयमें धर्मशास्त्रके वचन

यत्पापं ब्रह्महत्याया द्विगुणं गर्भपातने।
प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते॥

(पाराशरस्मृति ४। २०)

'ब्रह्महत्यासे जो पाप लगता है, उससे दुगुना पाप गर्भपात करनेसे लगता है। इस गर्भपातरूपी महापापका कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है, इसमें तो उस स्त्रीका त्याग कर देनेका ही विधान है।'

भ्रूणघ्नावेक्षितं चैव संस्पृष्टं चाप्युदक्यया।
पतत्रिणाऽवलीढं च शुना संस्पृष्टमेव च॥

(मनुस्मृति ४। २०८)

'गर्भहत्या करनेवालेका देखा हुआ, रजस्वला स्त्रीका स्पर्श किया हुआ, पक्षीका खाया हुआ और कुत्तेका स्पर्श किया हुआ अन्न न खाये।'

गर्भपात करनेवालेकी अगले जन्ममें सन्तान नहीं होती—इस बातको प्रकट करनेवाले अनेक श्लोक 'वृद्धसूर्यारुणकर्मविपाक' नामक ग्रन्थमें आये हैं। उनमेंसे कुछ श्लोक इस प्रकार हैं—

पूर्वे जनुषि या नारी गर्भघातकरी ह्यभूत्।
गर्भपातेन दुःखार्ता साऽत्र जन्मनि जायते॥

(४७७। १)

'जो स्त्री पूर्वजन्ममें गर्भपात करती है, वह इस जन्ममें भी गर्भपातका दुःख भोगनेवाली होती है अर्थात् उसकी सन्तान नहीं होती।'

वन्ध्येयं या महाभाग पृच्छति स्वं प्रयोजनम्।
गर्भपातरता पूर्वे जनुष्यत्र फलं त्विदम्॥

(६५९।१, ८५६।१, ९२१।१, १८५७।१)

'जो कोई स्त्री पूछती है कि मैं इस जन्ममें वन्ध्या (सन्तानहीन) किस कारण हुई, तो इसका उत्तर है कि यह पूर्वजन्ममें तेरे द्वारा किये गये गर्भपातका ही फल है।'

गर्भपातनपापाढ्या बभूव प्राग्भवेऽण्डज।
साऽत्रैव तेन पापेन गर्भस्थैर्यं न विदन्ति॥

(११८७।१)

'हे अरुण! जो पूर्वजन्ममें गर्भपात करती है, इस जन्ममें उस पापके कारण उसका गर्भ नहीं ठहरता अर्थात् वह सन्तानहीन होती है।'

~~○~~

सर्वश्रेष्ठ हिन्दूधर्म और उसके ह्रासका कारण

सर्वश्रेष्ठ धर्म

संसारमें मुख्यरूपसे चार धर्म प्रचलित हैं—हिन्दूधर्म (सनातनधर्म), मुस्लिमधर्म, बौद्धधर्म और ईसाईधर्म। इन चारों धर्मोंमेंसे एक-एक धर्मको माननेवाले करोड़ों मनुष्य हैं। इन चारों धर्मोंमें भी अवान्तर कई धर्म हैं। हिन्दूधर्मको छोड़कर शेष तीनों धर्मोंके मूलमें धर्म चलानेवाला कोई व्यक्ति मिलेगा; जैसे—मुस्लिमधर्मके मूलमें मोहम्मद साहब, बौद्धधर्मके मूलमें गौतम बुद्ध और ईसाई धर्मके मूलमें ईसामसीह मिलेंगे। परन्तु हिन्दूधर्मके मूलमें कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। कारण कि हिन्दूधर्म किसी व्यक्तिके द्वारा चलाया हुआ धर्म नहीं है, प्रत्युत यह अनादिकालसे

चला आ रहा है। जैसे भगवान् सनातन (शाश्वत) हैं, ऐसे ही हिन्दूधर्म भी सनातन है। इसलिये हिन्दूधर्मको 'सनातनधर्म' भी कहते हैं। भगवान्ने भी इस सनातनधर्मको अपना स्वरूप बताया है—'**ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहं.......शाश्वतस्य च धर्मस्य०**' (गीता १४। २७)। जिस युगमें जब-जब इस सनातनधर्मका ह्रास होता है, हानि होती है, तब-तब भगवान् अवतार लेकर इसकी संस्थापना करते हैं।* तात्पर्य है कि भगवान् भी इसकी संस्थापना, रक्षा करनेके लिये ही अवतार लेते हैं, इसको बनाने अथवा उत्पन्न करनेके लिये नहीं। अर्जुनने भी भगवान्को

---

* यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥
(गीता ४। ७-८)

सनातनधर्मका रक्षक बताया है—'**त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता**' (गीता ११। १८)।

एक उपज होती है और एक खोज होती है। जो वस्तु पहले मौजूद न हो, उसकी उपज होती है; और जो वस्तु पहलेसे ही मौजूद हो, उसकी खोज होती है। मुस्लिम, बौद्ध और ईसाई—ये तीनों ही धर्म व्यक्तिके मस्तिष्ककी उपज हैं। परन्तु सनातन हिन्दूधर्म किसी व्यक्तिके मस्तिष्ककी उपज नहीं है, प्रत्युत यह विभिन्न ऋषियोंके द्वारा किया गया अन्वेषण (खोज) है—'**ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः**'। अतः हिन्दूधर्मके मूलमें किसी व्यक्तिविशेषका नाम नहीं लिया जा सकता। यह अनादि, अनन्त और शाश्वत है। अन्य सभी धर्म तथा मत-मतान्तर भी इसी हिन्दूधर्मसे उत्पन्न हुए हैं। इसलिये उन धर्मोंमें मनुष्योंके कल्याणके लिये जो साधन बताये गये हैं, उनको भी हिन्दूधर्मकी

ही देन मानना चाहिये। अतः उन धर्मोंमें बताये गये अनुष्ठानोंका भी निष्कामभावसे कर्तव्य समझकर पालन किया जाय तो कल्याण होनेमें सन्देह नहीं करना चाहिये*। प्राणिमात्रके कल्याणके लिये जितना गहरा विचार हिन्दूधर्ममें किया गया है, उतना और किसी धर्ममें नहीं मिलता। हिन्दूधर्मके सभी सिद्धान्त पूर्णतया वैज्ञानिक और कल्याण करनेवाले हैं। अतः हिन्दूधर्म सर्वश्रेष्ठ है।

हिन्दुओंकी वृद्धि आवश्यक क्यों?

हिन्दूधर्ममें मुक्ति, तत्त्वज्ञान, कल्याण, परमशान्ति,

---

* प्रत्येक धर्ममें कुधर्म, अधर्म और परधर्म—ये तीनों होते हैं। दूसरेके अनिष्टका भाव, कूटनीति आदि 'कुधर्म' है, यज्ञमें पशुबलि देना आदि 'अधर्म' है और जो अपने लिये निषिद्ध है, ऐसा दूसरे वर्ण आदिका धर्म 'परधर्म' है। कुधर्म, अधर्म और परधर्म—इन तीनोंसे कल्याण नहीं होता। कल्याण उस धर्मसे होता है, जिसमें स्वार्थ और अभिमानके त्यागपूर्वक अपना तथा दूसरेका वर्तमान और भविष्यमें हित होता हो।

परमात्मतत्त्वकी प्राप्ति जितनी सुगमतासे बतायी गयी है, उतनी सुगमतासे प्राप्तिकी बात ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध, यहूदी, पारसी आदि किसी भी धर्ममें नहीं सुनी गयी है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि हिन्दुओंकी वृद्धि हो। कारण कि हिन्दूधर्मके अलौकिक, विलक्षण ग्रन्थोंकी बातोंको हिन्दुओंके सिवाय और कौन सुनेगा और उनका आदर करेगा? मुसलमानोंने तो हिन्दूधर्मके असंख्य अच्छे-अच्छे ग्रन्थोंको जला डाला। इसलिये आज वेदोंकी पूरी संहिता नहीं मिलती, सभी शास्त्र नहीं मिलते। इस कारण कितनी विलक्षण-विलक्षण विद्याएँ नष्ट हो गयीं, कला-कौशल नष्ट हो गये, जिनसे केवल हिन्दुओंको ही नहीं, संसारमात्रको लाभ पहुँचता। अब मुसलमानोंकी संख्या बढ़ रही है और हिन्दुओंकी संख्या घट रही है तो आगे चलकर क्या दशा होगी? हिन्दुओंमें कोई-न-

कोई तो हिन्दूधर्मके ग्रन्थोंको पढ़ेगा, पर जो हिन्दुओंके ग्रन्थोंको जला-जलाकर हमामका पानी गरम करते रहे, उन मुसलमानोंसे क्या ये आशा रखें कि वे हिन्दुओंके ग्रन्थोंको पढ़ेंगे? जो हिन्दुओंका धर्म-परिवर्तन करके उनको मुसलमान या ईसाई बनानेमें लगे हुए हैं, उनसे क्या यह आशा की जाय कि वे हिन्दुओंके ग्रन्थोंका आदर करेंगे? असम्भव है। इसी दृष्टिसे मैं हिन्दुओंमें परिवार-नियोजनका विरोध किया करता हूँ। वास्तवमें मेरा यह उद्देश्य बिलकुल नहीं है कि हिन्दुओंकी संख्या बढ़ जाय, जिससे उनको राज्य मिल जाय। मेरा उद्देश्य यह है कि मनुष्यका जल्दी और सुगमतासे कल्याण हो जाय। मैं कल्याणका पक्षपाती हूँ, राज्यका पक्षपाती नहीं।

मेरे मनमें मुसलमानोंके प्रति किञ्चिन्मात्र भी द्वेष नहीं है। परन्तु वे हिन्दुओंका नाश करना

चाहते हैं, इसलिये उनकी क्रिया मेरेको अच्छी नहीं लगती। कोई मेरेसे वैर, द्वेष रखनेवाला हो, मेरा बुरा करनेवाला हो, वह भी अगर मेरेसे अपने कल्याणकी बात पूछे तो मैं उसको वैसे ही बड़े प्रेमसे कल्याणका उपाय बताऊँगा, जैसे मैं अपनेमें श्रद्धा-प्रेम रखनेवालेको बताया करता हूँ। अगर कोई मुसलमान हृदयसे अपने कल्याणका उपाय पूछे तो मैं सबसे पहले उसको बताऊँगा, पीछे हिन्दूको बताऊँगा। मेरा कभी किसीसे भेदभाव रखनेका विचार है ही नहीं।

जीवमात्र परमात्माका अंश है। अतः मेरा जो स्वरूप है, वही-का-वही स्वरूप मुसलमानोंका भी है। जैसे मेरा स्वरूप परमात्माका अंश है, ऐसे ही मुसलमानोंका स्वरूप भी परमात्माका अंश है। अगर मैं उनसे वैर करता हूँ तो वास्तवमें अपने स्वरूपसे तथा अपने इष्टसे वैर करता हूँ।

कारण कि जो दूसरे सम्प्रदायकी निन्दा करते हैं, वे वास्तवमें अपने सिद्धान्तका अपमान करते हैं। जैसे—कोई विष्णुका भक्त है और वह शंकरकी निन्दा करता है तो वह समझता है कि विष्णुकी महिमा बढ़ा रहा हूँ और मेरा विष्णुमें अनन्यभाव है। परन्तु वास्तवमें शंकरकी निन्दा करनेसे यह सिद्ध होता है कि शंकर और शंकरके भक्तोंमें विष्णु नहीं है। अतः दूसरेके इष्टदेवकी निन्दा करनेवाला वास्तवमें अपनी ही हानि करता है, अपने ही इष्टदेवको कमजोर सिद्ध करता है। ऐसे ही अगर मैं मुसलमानोंकी निन्दा करूँगा तो उनमें मेरा परमात्मा नहीं है—यह सिद्ध होगा। इसलिये मुसलमान मेरे निजस्वरूप, आत्मस्वरूप, अभिन्नस्वरूप हैं। परन्तु मुसलमान हिन्दुओंकी हत्या करते हैं, उनकी स्त्रियोंका अपहरण करते हैं, उनके ग्रन्थोंको जलाते हैं, उनके मन्दिरोंको

तोड़ते हैं, उनकी गायोंकी हत्या करते हैं—सब प्रकारसे हिन्दुओंका नाश-ही-नाश करते हैं, यह क्रिया मुझे बहुत बुरी लगती है।

जब देशमें मुसलमानोंका राज्य हुआ, तब उन्होंने कितने हिन्दुओंको मारा, कितनी स्त्रियोंका अपहरण किया, कितने मन्दिरोंको तोड़ा, हिन्दुओंपर कितना अत्याचार किया—इसका कोई पारावार नहीं है! चित्तौड़में मुसलमानोंने इतने हिन्दुओंकी हत्या की थी कि केवल उनके जनेऊ साढ़े चौहत्तर मन इकट्ठे हुए थे! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तो जनेऊ धारण करते हैं, पर शूद्र आदि जनेऊ धारण नहीं करते। ऐसी स्थितिमें कितने हिन्दू मारे गये, इसकी कोई गणना नहीं! लोग अबतक चिट्ठियोंपर साढ़े चौहत्तरका अंक ७४ ॥—इस प्रकार लिखा करते थे, जिसका अभिप्राय यह होता था कि अन्य कोई व्यक्ति इस चिट्ठीको खोलकर पढ़ेगा तो

उसको चित्तौड़के नरसंहारका पाप लगेगा। विचार करें, अगर देशमें पुनः मुसलमानोंकी बहुलता हो गयी और उनका राज्य हो गया तो फिर क्या दशा होगी ? वोट-प्रणालीमें जिसकी संख्या अधिक होती है, उसीकी विजय होती है, उसीका राज्य होता है। इसलिये देशमें हिन्दुओंकी वृद्धि अत्यन्त आवश्यक है। इसमें केवल हिन्दुओंका ही नहीं, प्रत्युत सभी धर्मोंके लोगोंका हित निहित है; क्योंकि हिन्दूधर्म प्राणि-मात्रका हित चाहता है। हिन्दू ही 'विश्वकल्याण-यज्ञ' के आयोजन करता है। 'विश्वका कल्याण हो'—यह नारा भी हिन्दू ही लगाता है। घर-घरमें **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥'**— ऐसी प्रार्थना भी हिन्दू ही करता है। **'वासुदेवः सर्वम्'**, 'सब जग ईश्वररूप है'—ऐसी शिक्षा भी हिन्दू ही देता है।

हिन्दुओंके ह्रासका मुख्य कारण

पिछली जनगणनाके परिणामके अनुसार सन् १९८१—१९९१ के बीच भारतमें मुसलमानोंकी जनसंख्या ३२.७६ प्रतिशत और हिन्दुओंकी जनसंख्या २२.७८ प्रतिशत बढ़ी है। इस बातसे देशका हित चाहनेवाली हिन्दू-संस्थाओंका चिन्तित होना स्वाभाविक है। उन संस्थाओंका विचार है कि देशमें मुसलमानोंकी संख्यामें वृद्धि होनेका मुख्य कारण 'धर्मान्तरण' है अर्थात् प्रतिवर्ष बहुत बड़ी संख्यामें हिन्दू लोभवश अपना धर्म छोड़कर मुसलमान बन जाते हैं, जिससे मुसलमानोंकी संख्या बढ़ रही है। अतः धर्माचार्योंको, साधु-सन्तोंको यथासम्भव धर्मान्तरण रोकनेका और धर्मान्तरित हुए हिन्दुओंको वापिस हिन्दूधर्ममें लानेका प्रयत्न करना चाहिये। परन्तु वास्तविक बात दूसरी ही है! हिन्दुओंकी संख्या कम होनेका

मुख्य कारण 'परिवार-नियोजन' है। इस तरफ हिन्दू-संस्थाओंकी दृष्टि नहीं जाती तो यह बड़े आश्चर्य एवं खेदकी बात है!

परिवार-नियोजन अधिकतर हिन्दू ही करते हैं और यह हिन्दुओंपर ही जबर्दस्ती लागू किया जाता है। दूसरी बात, कानूनकी दृष्टिसे हिन्दू एकसे अधिक विवाह नहीं कर सकता, जब कि मुसलमानोंको चार विवाह करनेकी छूट है। इसलिये हिन्दू तो कहते हैं—'हम दो, हमारे दो', पर मुसलमान कहते हैं—'हम पाँच, हमारे पचीस'! जो ईसाई या मुसलमान राज्य पानेके लोभसे अपनी संख्या बढ़ानेमें लगे हुए हैं और इसके लिये हिन्दुओंका धर्म-परिवर्तन भी कर रहे हैं, उनसे क्या यह आशा रखी जा सकती है कि वे परिवार-नियोजनके द्वारा अपनी जनसंख्या बढ़नेसे रोकेंगे?

परम्परासे मैंने एक बात सुनी है कि कुछ

समय पहले दिल्लीकी एक मस्जिदमें मुसलमानोंकी सभा हुई। उसमें एक मुस्लिम नेताने कहा कि मुसलमानोंको अधिक बच्चे पैदा करने चाहिये। यह सुनकर एक मुसलमान बोला कि हम गरीब हैं, अधिक बच्चोंका पालन कैसे करेंगे ? तो उस नेताने उत्तर दिया कि अभी आपलोग थोड़ा कष्ट सह लो, पीछे हिन्दुओंकी सम्पत्ति हमारी ही तो होगी ! उसके कथनका अभिप्राय यह था कि गरीब हिन्दुओंको तो हम युक्तिसे मुसलमान बना लेंगे और धनी हिन्दू परिवार-नियोजन करके धीरे-धीरे अपने-आप खत्म हो जायँगे। आजकल वोटका जमाना है। जिसकी संख्या अधिक होगी, उसीका राज्य होगा।

मैं लगभग उन्तीस-तीस वर्षोंसे परिवार-नियोजनके विरुद्ध बोल रहा हूँ। परन्तु अभीतक हिन्दू-संस्थाओंने इस विषयपर थोड़ा भी गम्भीरता-

पूर्वक विचार नहीं किया अथवा उनको मेरी बात जँची ही नहीं! परिवार-नियोजनके द्वारा परिश्रम करके, समय खर्च करके, रुपये खर्च करके, तरह-तरहके उपायोंके द्वारा लाखों-करोड़ोंकी संख्यामें हिन्दुओंको पैदा होनेसे रोका जा रहा है। परन्तु इस तरफ ध्यान न देकर हिन्दुओंकी कम होती जनसंख्या और मुसलमानोंकी बढ़ती जनसंख्या पर चिन्ता प्रकट की जा रही है—यह आश्चर्यकी बात है। अगर हिन्दुओंकी घटती जन्मदर (अल्पमत) चिन्ताका विषय है, तो फिर परिवार-नियोजनके द्वारा घरमें खुली हिन्दुओंकी खानको बन्द करनेकी चेष्टा क्यों की जा रही है? अगर परिवार-नियोजन (कम जनसंख्या) अभीष्ट है तो फिर धर्मान्तरित लोगोंको पुनः हिन्दू बनाकर हिन्दुओंकी जनसंख्या बढ़ानेका परिश्रम क्यों किया जा रहा है?

धर्मान्तरित हिन्दुओंको पुनः हिन्दूधर्ममें लानेमें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है, परिश्रम करना पड़ता है, खर्चेके लिये बहुत रुपयोंकी व्यवस्था करनी पड़ती है, बहुत समय लगाना पड़ता है। धर्मान्तरित लोग वापिस हिन्दू बन भी जायँ तो उनसे हिन्दुओंको कोई विशेष लाभ नहीं होता। कारण कि जिनका अन्तःकरण इतना अशुद्ध है कि अपने सुखभोग, स्वार्थके लिये अपने धर्मका भी त्याग कर देते हैं, वे यदि वापिस हिन्दूधर्ममें आ भी जायँ तो क्या निहाल करेंगे? परन्तु जो हिन्दू जन्म ले रहे हैं, उनको न रोकनेमें कोई कठिनता नहीं, कोई परिश्रम नहीं, कोई खर्चा नहीं। धर्मान्तरण रोकनेके लिये जो धन खर्च किया जाता है, वह धन हिन्दू बालकोंके पालन-पोषण, शिक्षा आदिमें लगाया जा सकता है। जो हिन्दुओंके घरोंमें जन्म लेंगे, उनमें हिन्दूधर्मके

संस्कार स्वाभाविक एवं स्थायीरूपसे पड़ेंगे। धर्मान्तरित लोगोंको वापिस हिन्दू बनाना अपने हाथकी बात भी नहीं है। जो अपने हाथकी बात नहीं है, उसके लिये उद्योग करना और जो (हिन्दुओंको जन्म देना) अपने हाथकी बात है, उसको रोकनेका उद्योग करना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

वास्तवमें परिवार-नियोजन-कार्यक्रमसे हिन्दुओंका जितना नुकसान हुआ है, उतना नुकसान मुसलमानों और ईसाइयोंने भी कभी नहीं किया और वे कर सकेंगे भी नहीं! जितने हिन्दू धर्मान्तरित हुए हैं, उससे कई गुना अधिक हिन्दू जन्म लेनेसे रोके गये हैं। जनवरी ८, १९९१ में समाचार-पत्रोंमें छपा था कि देशमें परिवार-नियोजन-कार्यक्रमसे अबतक लगभग बारह करोड़ बच्चोंका जन्म रोका गया है। यह जानकारी तत्कालीन

स्वास्थ्य मंत्रीने राज्यसभामें दी थी। उस समय तो परिवार-नियोजन-कार्यक्रमोंमें बहुत अधिक तेजी नहीं थी। उसके बादके वर्षोंमें इस कार्यक्रममें बहुत तेजी आयी है। एक बच्चेका भी जन्म रोकनेसे आगे उससे होनेवाली संतानोंका जन्म भी स्वतः रुक जाता है। अतः धर्मान्तरणके घाटेकी पूर्ति तो हो सकती है, पर परिवार-नियोजनके घाटेकी पूर्ति किसी प्रकार हो ही नहीं सकती, असम्भव ही है।

धर्मान्तरित लोग तो वापिस हिन्दूधर्ममें आ सकते हैं, पर जिनका जन्म रोका गया है, वे वापिस हिन्दुओंके यहाँ जन्म न लेकर मुसलमानों और ईसाइयोंके यहाँ ही जन्मेंगे। कारण कि भगवान्‌ने कृपापूर्वक जिन जीवोंको अपना कल्याण करनेके लिये मनुष्यशरीर दिया है, उनको हिन्दूलोग अपने यहाँ नहीं आने देंगे तो फिर वे मुसलमानों और

ईसाइयोंके यहाँ ही जन्मेंगे। अगर हिन्दू उनके विशेष ऋणानुबन्धसे अपने यहाँ होनेवाले जन्मको रोकेंगे तो वे सामान्य ऋणानुबन्धसे विधर्मियोंके यहाँ जन्मेंगे। कारण कि हिन्दुओंका ज्यादा सम्बन्ध मुसलमानों और ईसाइयोंसे रहता है; उनकी बनायी वस्तुओंसे वे सुख-आराम लेते हैं; अतः उनके साथ ऋणानुबन्ध रहनेसे वहीं उनका जन्म होगा। तात्पर्य यह हुआ कि मनुष्यशरीरमें आनेवाले जीवोंको अपने यहाँ आनेसे रोककर हिन्दूलोग मुसलमानों और ईसाइयोंकी संख्याको ही तीव्र गतिसे बढ़ा रहे हैं। इसलिये वास्तवमें परिवार-नियोजनके द्वारा हिन्दूलोग मूलरूपसे मुसलमानों और ईसाइयोंकी ही संख्या बढ़ानेका उद्योग कर रहे हैं। सन्तति-निरोध करके वे असली (जन्मसे ही) मुसलमान और ईसाई पैदा करनेमें सहायता दे रहे हैं और नकली (धर्मान्तरण करके) मुसलमान

प्यारे लगते हैं और इनको वह बहुत महत्त्व देता है। गर्भपात करवानेसे शरीर भले ही कमजोर हो जाय और रुपये भले ही खर्च हो जायँ, फिर भी गर्भपातरूपी महान् पाप करते हैं—यह कितने पतनका चिह्न है! मनुष्य रुपये पैदा करता है, रुपये मनुष्यको पैदा नहीं करते। उन रुपयोंको खर्च करके उनके उत्पादक (मनुष्य) का नाश कर देना कितनी बेसमझी है!

गर्भ-स्थापन कर सकनेके सिवाय कोई पुरुषत्व नहीं है और गर्भ-धारण कर सकनेके सिवाय कोई स्त्रीत्व नहीं है। पुरुषत्वके बिना पुरुष और स्त्रीत्वके बिना स्त्री निस्तत्त्व, निःसार है। पुरुष और स्त्रीमें जो तत्त्व, सार है, उसीको वर्तमानमें नष्ट कर रहे हैं! अगर पुरुषमें पुरुषत्व न रहे और स्त्रीमें स्त्रीत्व न रहे तो वे मात्र भोगी ही रहे, मनुष्य रहे ही नहीं। पुरुष भोगी बनकर लम्पट

हो गया और स्त्री भोग्या बनकर वेश्या हो गयी! पुरुष पिता न बनकर लम्पट बन जाय और स्त्री माता न बनकर वेश्या बन जाय—इससे अधिक पतन और क्या हो सकता है? मनुष्य यदि मनुष्यको पैदा न कर सके तो वह मनुष्य क्या रहा, एक नाटकीय जीव हो गया। उससे तो पशु अच्छे हैं, जो पशुओंको पैदा तो कर सकते हैं!

गीतामें आसुरी मनुष्योंके लिये आया है—

कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः॥ (१६।११)

'आसुरी सम्पदावाले मनुष्य पदार्थोंका संग्रह और उनका भोग करनेमें ही लगे रहते हैं और 'जो कुछ है, वह इतना ही है'—ऐसा निश्चय करनेवाले होते हैं।'

आजकल ऐसे ही आसुरी लोगोंकी प्रधानता हो रही है! उनका यह भाव रहता है कि देशका चाहे नाश हो जाय, पर हम सुख भोग लें और

हो गया और स्त्री भोग्या बनकर वेश्या हो गयी! पुरुष पिता न बनकर लम्पट बन जाय और स्त्री माता न बनकर वेश्या बन जाय—इससे अधिक पतन और क्या हो सकता है? मनुष्य यदि मनुष्यको पैदा न कर सके तो वह मनुष्य क्या रहा, एक नाटकीय जीव हो गया। उससे तो पशु अच्छे हैं, जो पशुओंको पैदा तो कर सकते हैं!

गीतामें आसुरी मनुष्योंके लिये आया है—

कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ (१६।११)

'आसुरी सम्पदावाले मनुष्य पदार्थोंका संग्रह और उनका भोग करनेमें ही लगे रहते हैं और 'जो कुछ है, वह इतना ही है'—ऐसा निश्चय करनेवाले होते हैं।'

आजकल ऐसे ही आसुरी लोगोंकी प्रधानता हो रही है! उनका यह भाव रहता है कि देशका चाहे नाश हो जाय, पर हम सुख भोग लें और

संग्रह कर लें। वे लोग अपने सुखके लिये अपनी सन्तानका भी नाश कर देते हैं। उनकी केवल वर्तमानके सुखपर ही दृष्टि है, भविष्यमें भले ही दुःख पाना पड़े! परलोकमें कितना भयंकर दुःख पाना पड़ेगा, इसका तो कहना ही क्या है, इस लोकमें कितना दुःख भोगना पड़ेगा, इसकी भी परवाह नहीं है। जिसका मरना निश्चित है, उसके भरोसे सन्तति-निरोध करा लेते हैं, कितनी बेसमझीकी बात है! अभी एक-दो सन्तान है, वह अगर मर जाय तो क्या दशा होगी—इस तरफ खयाल ही नहीं है।

परिवार-नियोजन-कार्यक्रमसे लोगोंका चरित्र भ्रष्ट हो रहा है। सन्तति-निरोधके कृत्रिम उपायोंका प्रचार होनेसे समाजमें व्यभिचारकी वृद्धि हो रही है। कुँआरी लड़कियों और विधवाओंको भी गर्भ रोकने अथवा गिरानेका उपाय मिलनेसे

उनका भी पतन हो रहा है। अगर सरकार परिवार-नियोजन करवाना ही चाहती है तो उसे लोगोंको भोगासक्तिके लिये प्रोत्साहित न करके संयम रखने, ब्रह्मचर्यका पालन करनेके लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। लोगोंमें पहलेसे ही भोगासक्तिकी आग लगी हुई है, फिर नसबन्दी, निरोध आदि कृत्रिम उपायोंके प्रचारसे उस आगमें और घी डालना कहाँतक उचित है? अगर संयम, ब्रह्मचर्य आदिका प्रचार किया जाय तो लोगोंका स्वास्थ्य भी सुधरेगा, वे भोगी, प्रमादी, चरित्रहीन, अकर्मण्य न बनकर सच्चरित्र और परिश्रमी बनेंगे, जिससे देश भीतरसे खोखला न होकर मजबूत बनेगा। विचार करें, चरित्र मूल्यवान् है या पैसा? अनेक लोगोंने धर्मकी रक्षाके लिये प्राणोंका भी त्याग कर दिया तो धर्म मूल्यवान् हुआ या शरीर?* अँग्रेजीकी एक प्रसिद्ध कहावत है—

'धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, चरित्र गया तो सब कुछ गया।' चरित्र-नाशसे बढ़कर देशका और पतन क्या होगा?

~~○~~

राजाका कर्तव्य

सामाजिक व्यवस्थापर समाजका अधिकार है, राजा (शासक या सरकार) का अधिकार नहीं। अतः समाजके नियम बनाना राजाका कर्तव्य नहीं है। विवाह, व्यापार, जीविका, सन्तानोत्पत्ति, वर्णाश्रमधर्मका पालन आदि प्रजाके धर्म हैं। प्रजाके

---

* न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः।
नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः॥
(महाभारत, स्वर्गा० ५।६३)

'कामनासे, धनसे, लोभसे अथवा प्राण बचानेके लिये भी अपने धर्मका त्याग न करे; क्योंकि धर्म नित्य है और सुख-दुःख अनित्य हैं। इसी प्रकार जीवात्मा नित्य है और उसके बन्धनका हेतु (राग) अनित्य है।'

धर्मोंमें हस्तक्षेप करना राजाका कर्तव्य नहीं है। अगर राजा उनमें हस्तक्षेप करता है तो यह अन्याय है। राजाका मुख्य कर्तव्य है—प्रजाकी रक्षा करना और उससे बलपूर्वक धर्मका पालन करवाना।

कोई धर्मका उल्लंघन न करे, इसलिये धर्मका पालन करवाना राजाका अधिकार है। परन्तु धर्मशास्त्रके विरुद्ध कानून बनाना राजाका घोर अन्याय है। हिन्दू एकसे अधिक विवाह न करे, अमुक उम्रमें विवाह करे, दोसे अधिक सन्तान पैदा न करे आदि कानून बनाना राजाका अधिकार नहीं है। राजाका कर्तव्य अपने राज्यमें जन्म लेनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके जीवन-निर्वाहकी व्यवस्था करना है, न कि उसके जन्मपर ही रोक लगा देना। अपने धर्म, वर्ण, आश्रम, जाति आदिके अनुसार आचरण करना प्रजाका अधिकार है। अगर प्रजा धर्म, वर्णाश्रम आदिकी मर्यादाके

विरुद्ध चले तो उसको शासनके द्वारा मर्यादामें लगाना राजाका कर्तव्य है।

एष राज्ञां परो धर्मो ह्यार्तानामार्तिनिग्रहः।

(श्रीमद्भा० १। १७। ११)

'राजाओंका परम धर्म यही है कि वे दुःखियोंका दुःख दूर करें।'

राज्ञो हि परमो धर्मः स्वधर्मस्थानुपालनम्।
शासतोऽन्यान् यथाशास्त्रमनापद्युत्पथानिह॥

(श्रीमद्भा० १। १७। १६)

'बिना आपत्तिकालके मर्यादाका उल्लंघन करनेवालोंको शास्त्रानुसार दण्ड देते हुए अपने धर्ममें स्थित लोगोंका पालन करना राजाओंका परम धर्म है।'

य उद्धरेत्करं राजा प्रजा धर्मेष्वशिक्षयन्।
प्रजानां शमलं भुङ्क्ते भगं च स्वं जहाति सः॥

(श्रीमद्भा० ४। २१। २४)

'जो राजा प्रजाको धर्ममार्गकी शिक्षा न देकर केवल उससे कर वसूल करनेमें लगा रहता है, वह केवल प्रजाके पापका ही भागी होता है और अपने ऐश्वर्यसे हाथ धो बैठता है।'

श्रेयः प्रजापालनमेव राज्ञो यत्साम्पराये सुकृतात् षष्ठमंशम्।
हर्तान्यथा हृतपुण्यः प्रजानामरक्षिता करहारोऽघमत्ति॥

(श्रीमद्भा० ४। २०। १४)

'राजाका कल्याण प्रजापालनमें ही है। इससे उसे परलोकमें प्रजाके पुण्यका छठा भाग मिलता है। इसके विपरीत जो राजा प्रजाकी रक्षा तो नहीं करता, पर उससे कर वसूल करता जाता है, उसका सारा पुण्य प्रजा छीन लेती है और बदलेमें उसे प्रजाके पापका भागी होना पड़ता है।'

यस्य राष्ट्रे प्रजाः सर्वास्त्रस्यन्ते साध्व्यसाधुभिः।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति कीर्तिरायुर्भगो गतिः॥

(श्रीमद्भा० १। १७। १०)

'जिस राजाके राज्यमें दुष्टोंके उपद्रवसे सारी प्रजा त्रस्त रहती है, उस मतवाले राजाकी कीर्ति, आयु, ऐश्वर्य और परलोक नष्ट हो जाते हैं।'

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥

(मानस, अयोध्या० ७१। ३)

प्रजाका शासक राजा होता है और राजाके शासक वीतराग सन्त-महात्मा होते हैं। धर्म और धर्माचार्यपर राजाका शासन नहीं चलता। उनपर शासन करना राजाका घोर अन्याय है। धर्म और धर्माचार्यका राजापर शासन होता है। यदि उनका राजापर शासन न हो तो राजा उच्छृंखल हो जाय! निर्बुद्धि राजा ही धर्म और धर्माचार्यपर शासन करता है, उनपर अपनी आज्ञा चलाता है; क्योंकि वह समझता है कि बुद्धि मेरेमें ही है! दूसरा भी कोई बुद्धिमान् है—यह बात उसको जँचती ही नहीं।

पहले हमारे देशमें राजालोग राज्य तो करते

थे, पर सलाह ऋषि-मुनियोंसे लिया करते थे। कारण कि अच्छी सलाह वीतराग पुरुषोंसे ही मिल सकती है, भोगी पुरुषोंसे नहीं। इसलिये कानून बनानेका अधिकार वीतराग पुरुषोंको ही है। महाराज दशरथ और भगवान् राम भी प्रत्येक कार्यमें वसिष्ठजीसे सम्मति लेते थे और उनकी आज्ञासे सब काम करते थे। परन्तु आजकलके शासक सन्तोंसे सम्मति लेना तो दूर रहा, उलटे उनका तिरस्कार, अपमान करते हैं। जो शासक खुद वोटोंके लोभमें, स्वार्थमें लिप्त है, उसके बनाये हुए कानून कैसे ठीक होंगे? धर्मके बिना नीति विधवा है और नीतिके बिना धर्म विधुर है। अतः धर्म और राजनीति—दोनों साथ-साथ होने चाहिये, तभी शासन बढ़िया होता है। बढ़िया शासनका नमूना महाराज अश्वपतिके इन वचनोंसे मिलता है—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

(छान्दोग्य० ५। ११। १५)

'मेरे राज्यमें न तो कोई चोर है, न कोई कृपण है, न कोई मदिरा पीनेवाला है, न कोई अनाहिताग्नि (अग्निहोत्र न करनेवाला) है, न कोई अविद्वान् है और न कोई परस्त्रीगामी ही है, फिर कुलटा स्त्री (वेश्या) तो होगी ही कैसे ?'

जो वोटोंके लिये आपसमें लड़ते हैं, कपट करते हैं, हिंसा करते हैं, लोगोंको रुपये दे-देकर, फुसला-फुसलाकर वोट लेते हैं, उनसे क्या आशा रखी जाय कि वे न्याययुक्त राज्य करेंगे ? नेतालोग वोट लेने तो आ जाते हैं, पर वोट मिलनेके बाद सोचते ही नहीं कि लोगोंकी क्या दशा हो रही है ? वोट लेनेके लिये तो खूब मोटरें दौड़ायेंगे, तेल फूँकेंगे, लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करेंगे,

अपना और लोगोंका समय बरबाद करेंगे, पर वोट मिलनेके बाद आकर पूछेंगे ही नहीं कि भाई, तुमलोगोंकी सहायतासे हमें वोट मिले हैं, तुम्हारे घरमें कोई तकलीफ तो नहीं है? तुम्हारा जीवन-निर्वाह कैसा हो रहा है? पहले राजालोग शासन करते थे तो वे राज्यकी सम्पत्तिको अपनी न मानकर प्रजाकी ही मानते थे और उसको प्रजाके ही हितमें खर्च करते थे। प्रजाके हितके लिये ही वे प्रजासे कर लेते थे। सूर्यवंशी राजाओंके विषयमें महाकवि कालिदास लिखते हैं—

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥

(रघुवंश १। १८)

'वे राजालोग अपनी प्रजाके हितके लिये प्रजासे उसी प्रकार कर लिया करते थे, जिस प्रकार सहस्रगुना करके बरसानेके लिये ही

सूर्य पृथ्वीसे जल लिया करता है।'

जब राजाओंमें स्वार्थभाव आ गया और वे प्रजाकी सम्पत्तिका खुद उपभोग करने लगे, तब उनका परम्परासे अरबों वर्षोंसे चला आया राज्य भी नहीं रहा। आज झूठ-कपट आदिके बलपर जीतकर आये हुए नेतालोग सोचते हैं कि हमें तो पाँच वर्षोंतक कुर्सीपर रहना है, आगेका कोई भरोसा नहीं; अतः जितना संग्रह करके लाभ उठा सकें, उतना उठा लें, देश चाहे दरिद्र हो जाय। वे यह सोचकर नीति-निर्धारण करते हैं कि धनियोंका धन कैसे नष्ट हो? यह नहीं सोचते कि सब-के-सब धनी कैसे हो जायँ? महाभारतमें आया है—

यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः।
तद्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया॥

(महा० उद्योग० ३४। १७)

'जैसे भौंरा फूलोंकी रक्षा करता हुआ ही उनके मधुको ग्रहण करता है, उसी प्रकार राजा भी प्रजाको कष्ट दिये बिना ही उनसे धन (कर) ग्रहण करे।' परन्तु आज सरकार धनियोंका धन छीननेके लिये उनके घरों और दूकानोंमें छापा मारती है, जो कि डाका डालना ही है, और धनीलोग टैक्ससे बचनेके लिये तरह-तरहकी बेईमानी सीखते हैं। दोनों ही देशका हित नहीं सोचते कि इस नीतिसे भविष्यमें देशकी क्या दशा होगी? सरकार धनियोंसे जबर्दस्ती धन लेनेकी चेष्टा करेगी तो धनियोंके भीतर भी जबर्दस्ती धन छिपानेका भाव पैदा होगा। इसलिये सरकारको चाहिये कि वह धनियोंका धन न छीनकर उनके भीतर उदारताका, परोपकारका भाव जाग्रत् करे। यह भाव वीतराग पुरुषोंके द्वारा ही जाग्रत् किया जा सकता है।

वर्तमान राजनीति संघर्ष पैदा करनेवाली है। हमें वोट दो, दूसरी पार्टीको वोट मत दो, वह ठीक नहीं है—इससे संघर्ष पैदा होता है। वोट-प्रणालीमें मूर्खताकी प्रधानता है। जिस समाजमें मूर्खोंकी प्रधानता होती है, वहीं वोट-प्रणाली लागू की जाती है। महात्मा गाँधीका भी एक वोट और भेड़ चरानेवालेका भी एक वोट! सज्जन पुरुषका भी एक वोट और दुष्ट पुरुषका भी एक वोट! यह समानता मूर्खोंमें ही होती है। *'अँधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।'* वोट-प्रणालीमें भी बेईमानी होती है। जिनके हाथमें सत्ता होती है, वे वोट-प्रणालीका खूब दुरुपयोग करते हैं। वोट प्राप्त करनेके लिये विधर्मियोंका पक्ष लेते हैं, समाजकण्टकोंका पक्ष लेते हैं, अपराधियोंका सहारा लेते हैं। ये बातें किसीसे छिपी नहीं हैं।

वास्तवमें वोट देनेका, सरकार चुननेका अधिकार केवल उन्हीं पुरुषोंको है, जो सच्चे समाजसेवक, त्यागी, धर्मात्मा, सदाचारी, परोपकारी हैं। उनमें भी विशेष अधिकार जीवन्मुक्त, तत्त्वज्ञ महापुरुषोंको है। माँ कोई कार्य करती है तो बालककी सलाह नहीं लेती; क्योंकि बालक मूर्ख (बेसमझ) होता है। परन्तु वोट देनेकी वर्तमान प्रणालीके अनुसार यदि बुद्धिमानोंकी संख्या निन्यानबे है और मूर्खोंकी संख्या सौ है तो एक वोट अधिक होनेसे मूर्ख जीत जायँगे, बुद्धिमान् हार जायँगे, जब कि वास्तवमें सौ मूर्ख मिलकर भी एक बुद्धिमान्‌की बराबरी नहीं कर सकते*। वर्तमान वोट-प्रणालीके अनुसार जिसकी संख्या अधिक

---

* चन्दनकी चुटकी भली, गाड़ी भलौ न काठ।
बुद्धिवान एकहि भलौ, मूरख भलौ न साठ॥

होती है, वह जीत जाता है और राज्य करता है और जिसकी संख्या कम होती है, वह हार जाता है। विचार करें, समाजमें विद्वानोंकी संख्या अधिक होती है या मूर्खोंकी? सज्जनोंकी संख्या अधिक होती है या दुष्टोंकी? ईमानदारोंकी संख्या अधिक होती है या बेईमानोंकी? अध्यापकोंकी संख्या अधिक होती है या विद्यार्थियोंकी? जिनकी संख्या अधिक होगी, वे ही वोटोंसे जीतेंगे और देशपर शासन करेंगे, फिर देशकी क्या दशा होगी—विचार करें!

~~०~~
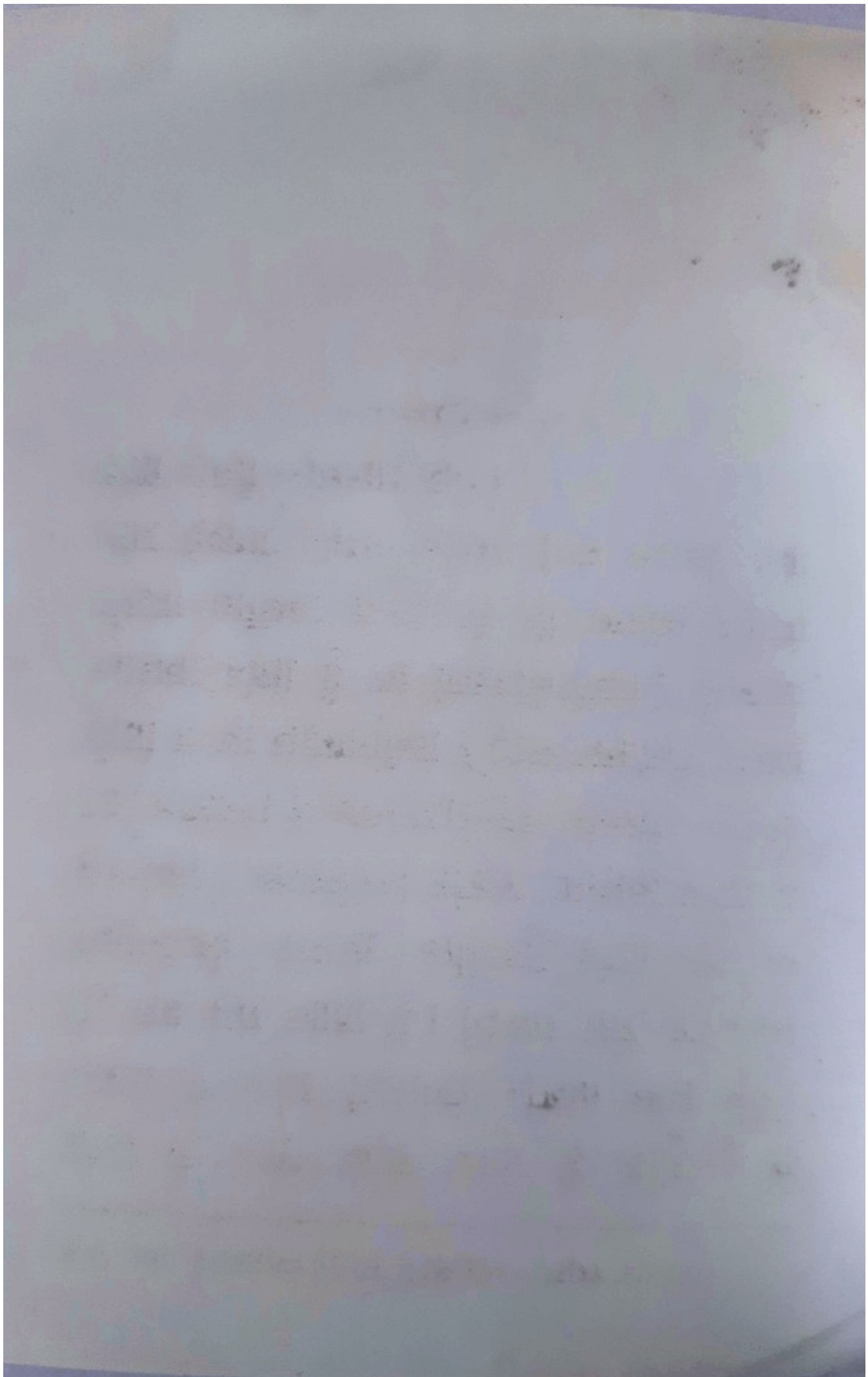
'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

डाकद्वारा एवं विदेशोंमें पुस्तकें भेजनेकी व्यवस्था केवल गोरखपुरमें है।

gitapressbookshop.in से गीताप्रेस प्रकाशन online खरीदें।

इन्दौर-452001	जी॰ 5, श्रीवर्धन, 4 आर. एन. टी. मार्ग	(0731) 2526516, 2511977
ऋषिकेश-249304	गीताभवन, पो॰ स्वर्गाश्रम	(0135) 2430122, 2432792
कटक-753009	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	(0671) 2335481
कानपुर-208001	24/55, बिरहाना रोड	फोन/फैक्स (0512) 2352351
कोयम्बटूर-641018	गीताप्रेस मेंशन, 8/1 एम, रेसकोर्स	(0422) 3202521
कोलकाता-700007	गोबिन्दभवन; 151, महात्मा गाँधी रोड	(033) 40605293, 22680251
गोरखपुर-273005	गीताप्रेस—पो॰ गीताप्रेस	(0551) 2334721, 2331250, फैक्स 2336997
चेन्नई-600010	इलेक्ट्रो हाउस, रामनाथन स्ट्रीट किलपौक	(044) 26615959 ; फैक्स 26615909
जलगाँव-425001	7, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	(0257) 2226393 ; फैक्स 2220320
दिल्ली-110006	2609, नयी सड़क	(011) 23269678; फैक्स 23259140
नागपुर-440002	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, 851, न्यू इतवारी रोड	(0712) 2734354
पटना-800004	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	(0612) 2300325
बेंगलुरु-560027	7/3, सेकेण्ड क्रास, लालबाग रोड	(080) 65636566
भीलवाड़ा-311001	जी 7, आकार टावर, सी ब्लाक, गान्धीनगर	(01482) 248330
मुम्बई-400002	282, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट)	(022) 22030717
राँची-834001	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	(0651) 2210685
रायपुर-492009	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़)	(0771) 4034430
वाराणसी-221001	59/9, नीचीबाग	(0542) 2413551
सूरत-395001	2016 वैभव एपार्टमेन्ट, भटार रोड	(0261) 2237362, 2238065
हरिद्वार-249401	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	(01334) 222657
हैदराबाद-500095	41, 4-4-1, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	(040) 24758311, 66758311
काठमाडौं (नेपाल)	पसल नं॰ 6,7,8, माधवराज सुमार्गी स्मृति भवन, वनकाली, पशुपति क्षेत्र। e-mail : gitapress.nepal@gmail.com	मोबाइल : 9823490038

स्टेशन-स्टाल— **दिल्ली** (प्लेटफार्म नं॰ 5-6); **नयी दिल्ली** (नं॰ 14-15); **हजरत निजामुद्दीन** [दिल्ली] (नं॰ 4-5); **कोटा** [राजस्थान] (नं॰ 1); **बीकानेर** (नं॰ 1); **गोरखपुर** (नं॰ 1); **गोण्डा**(नं॰ 1); **लखनऊ** [एन॰ ई॰ रेलवे]; **कानपुर** (नं॰ 1); **वाराणसी** (नं॰ 4-5); **मुगलसराय** (नं॰ 3-4); **हरिद्वार** (नं॰ 1); **मथुरा** (नं॰ 2-3); **झाँसी** (नं॰ 1); **पटना** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं॰ 1); **धनबाद** (नं॰ 2-3); **मुजफ्फरपुर** (नं॰ 1); **समस्तीपुर** (नं॰ 2); **छपरा** (नं॰ 1); **सीवान** (नं॰ 1); **हावड़ा** (नं॰ 5 तथा 18 दोनोंपर); **कोलकाता** (नं॰ 1); **सियालदा मेन** (नं॰ 8); **आसनसोल** (नं॰ 5); **कटक** (नं॰ 1); **भुवनेश्वर** (नं॰ 1); **अहमदाबाद** (नं॰ 2-3); **राजकोट** (नं॰ 1); **जामनगर** (नं॰ 1); **भरुच** (नं॰ 4-5); **वडोदरा** (नं॰ 4-5); **इन्दौर** (नं॰ 5); **जबलपुर** (नं॰ 6); **औरंगाबाद** [महाराष्ट्र] (नं॰ 1); **गोंदिया** [महाराष्ट्र] (नं॰ 1); **सिकन्दराबाद** [आं॰ प्र॰] (नं॰ 1); **विजयवाड़ा** (नं॰ 6); **गुवाहाटी** (नं॰ 1); **खड़गपुर** (नं॰ 1-2); **रायपुर** [छत्तीसगढ़] (नं॰ 1); **बिलासपुर**(नं॰ 1); **रायगढ़** (नं॰ 1); **बेंगलुरु** (नं॰ 1); **यशवन्तपुर** (नं॰ 6); **हुबली** (नं॰ 1-2); **श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम्** [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं॰ 1)।

फुटकर पुस्तक-दूकानें— **चूरू**-ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क, **ऋषिकेश**-मुनिकी रेती; **बेरहामपुर**-म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, के॰ एन॰ रोड, **नडियाड** (गुजरात) संतराम मन्दिर; **चेन्नई**-12, अभिरामी माल, पुरासावलकम, निकट किलपौक/वेपेरी।

Code 702